

गोरखपुर, 15 सितम्बर। गोरखनाथ मन्दिर में युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज की 50वीं पुण्यतिथि एवं ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की पाचवीं पुण्यतिथि समारोह के अन्तर्गत “भारत की सनातन संस्कृति में गो-सेवा का महत्व” संगोष्ठी में मुख्य वक्ता गो सेवा आयोग, उत्तर प्रदेश के अध्यक्ष प्रो० श्याम नन्दन जी ने कहा कि भारत में नई कृषि क्रान्ति का युग दस्तक दे रहा है। भारत के माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी एवं उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री माननीय योगी आदित्यनाथ जी ने कृषि को भारत की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार बनाने का जो अभियान छेड़ रखा है वह जीरो बजट कृषि योजना और गो वंश के संरक्षण संवर्धन से ही पूर्ण होगा। गो वंश की इसमें महत्वपूर्ण भूमिका है। आगे भारतीय नश्ल की गायों पर हुए शोधों ने यह सिद्ध कर दिया है कि कृषि रासायनिक खादों और जैविक खादों की अपेक्षा गो वंश के गोबर और गो मूत्र पर आधारित खेती न केवल हमारी लागत शून्य करेगी अपितु स्वास्थ्य वर्धक अन्य का उत्पादन करेगी और किसानों की आय में अकल्पनीय वृद्धि होगी। न्यूजीलैंड एवं आस्ट्रेलिया में पशु वैज्ञानिकों ने भारतीय नश्ल की गायों और जर्सी गायों के दूध पर जो शोध निष्कर्ष दिये हैं वह हमारी आँख खोलने वाला है। जर्सी गायों का दूध उतेजना पैदा करता है। विशाद पैदा करता है। रक्तचाप बढ़ाता है। जबकि भारतीय नश्ल की सभी गायों का दूध मानव स्वास्थ्य के लिए अमृत है। भारतीयों ऋषियों ने यह शोध आज से हजारों वर्ष पहले कर लिया था। वेद के रचयिताओं ने लिखा है कि गाय विश्व की माता है। गाय की महत्व को इस बात से भी समझा जा सकता है कि माँ की ही तरह नौ माह दस दिनों में गाय भी बच्चा देती है। माँ के दूध के बाद एक मात्र गाय का दूध माँ के दूध जैसा अमृत है। उन्होंने गो वंश पर आधारित कृषि और कृषि उत्पादों पर नये शोध एवं उनके स्वयं के द्वारा किये जा रहे प्रयोगों को विस्तार से रखा। उन्होंने कहा कि इधर के 30-40 वर्षों में हमने रासायनिक खादों के माध्यम से खाद्यानों में जहर घोला है जिसके कारण चिकित्सालय भरे पड़े हैं। इधर जैविक खेती का प्रचार-प्रसार शुरू हुआ है जो अव्यवहारिक है जो मैं स्वयं अपने खेतों में इसकी स्थलता प्रमाणित कि है। जैविक खेती के लिए एक एकड़ खेत में तीन सौ कुण्टल खाद चाहिए और इसके लिए 18-20 गो वंश चाहिए। जबकि पद्म श्री सुभाष कालेकर द्वारा जीरो बजट आधारित प्रकृतिक खेती का जौ तरीका खोजा गया है। वह भारत के खेतों और किसानों की काया पलट देगी। उन्होंने कहा कि भारतीय नश्ल के गायों के गोबर और गो मूत्र में ही वह ताकत है कि उसर भूमि को एक वर्ष में उपजाऊ बना देगी। उन्होंने ने आहवाहन किया अब समय आ गया है कि भारत में भारतीय गो वंश पर आधारित वैज्ञानिक कृषि प्रारम्भ की जाय। भारत दुनिया भर को खाद्यान उपलब्ध कराने में समर्थ होगा। गांव का पैस गांव में और शहर का पैसा भी गांव में जायेगा। उन्होंने कहा कि गाय पशु नहीं अपितु हिन्दुत्व की आत्मा है। गो-सेवा विषय नहीं हमारा अस्तित्व है। पंच गव्य के बिना मानव द्विज नहीं हो सकता। भगवान का धरती पर अवतरण गौ माता की रक्षा के लिए होता रहा है। गौ माता और धरती माता अभिन्न है। गौ माता को स्थिर रूप में देखना हो तो धरती माँ को देखो और धरती माँ को चलते फिरते देखना हो तो गौ माता को देखो। उत्तर प्रदेश सरकार 56 जिलों में गो संरक्षण केन्द्र काम करना प्रारम्भ कर दिये हैं तथा बाकी जिलों में काम हो रहा है। इसी प्रकार 127

कान्हा उपवन शहरी क्षेत्रों में गो संरक्षण केन्द्र खोले गये हैं। उत्तर प्रदेश में 526 रजिस्टर्ड गोशालाएं हैं। यदि कोई किसान चार गो वंश रखता है तो उसे प्रति गो वंश के हिसाब से 30 रुपये प्रतिदिन प्रोत्साहन राशि दी जायेगी।

मुख्य अतिथि अरैल आश्रम, प्रयागराज से पधारे स्वामी गोपालदास जी महाराज ने कहा कि धर्मरक्षा, स्वास्थ्य रक्षा, आर्थिक लाभ और पर्यावरण की दृष्टि से गौ तथा गौवंश का संरक्षण एवं संवर्धन आवश्यक है। हमारे वैदिक ग्रन्थों से लेकर पौराणिक ग्रन्थों तक में गाय की महिमा गायी गयी है। 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम गोमाता के प्रति आस्था के प्रश्न के गर्भ से ही उपजा था। भारत के राष्ट्रपति सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने 1967 में घोषणा की थी कि नवगठित सरकार गौ हत्या पर प्रतिबन्ध लगायेगी। भाई जी श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार, बाबा राघवदास, स्वामी करपात्री जी, लाला हरदेवसहाय जैसे महापुरुषों के नेतृत्व में गोवंश की हत्या पर प्रतिबन्ध के लिए जन-जागरण एवं आन्दोलन चलाए गये। आज भी अहिंसा के पुजारी इस देश में बड़ी संख्या में गो वंश की प्रतिदिन हत्या होती है। भारतीय संस्कृति यज्ञ की संस्कृति हैं। गोमूत्र, गोदूध, गोबर, गोघृत आदि के बिना पंचामृत एवं यज्ञ की कल्पना ही नहीं की जा सकती। गोमाता हमारी यज्ञ संस्कृति की प्रतीक है। ये हमारे सामाजिक-आर्थिक-धार्मिक जीवन की धुरी हैं। भारत का बोध वाक्य रहा 'भारत देश से नाता है गो हमारी माता है' ऐसे देश में गौ वंश की हत्या महापाप है। गौ धन की रक्षा का संलल्प देश की वर्तमान आवश्यकता है।

संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए पूर्व कुलपति प्रो० यू०पी० सिंह ने कहा कि जिस गौ को हम माता मानते हैं, कृषि प्रधान देश में हमारे आर्थिक संरचना की जो रीढ़ है, उसी गोवंश का अस्तित्व ही जिस प्रकार आज खतरे में है वो भारत के लिए दुर्भाग्यपूर्ण है और चिंता का विषय है। गोमाता की सेवा के बगैर लोक-परलोक दोनों जीवन अधूरा है। गोमाता सनातन अस्मिता की प्रतीक है। योगी आदित्यनाथ जी महाराज संसद में गोवंश के रक्षा की लड़ाई लड़ते हैं, यह गोरखपुर के लिए सौभाग्य की बात है। हम भी लोकचेतना को जाग्रित करें और गोसेवा का व्रत ले।

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी राघवाचार्य जी महाराज ने कहा कि 33 करोड़ देवी-देवता जितना मानव पर उपकार नहीं कर सकते उतना गौ माता अकेले कर सकती है। इसलिए ही हिन्दू गोमाता में तैंतीस करोड़ देवी-देवताओं का हम एक साथ दर्शन करते हैं। अपनी सरलता और उपयोगिता के कारण गौ वंश की महत्ता प्रायः सभी सभ्य देशों में न्यूनाधिक रूप से विद्यमान है। भारत जैसे धर्मप्राण एवं कृषि प्रधान देश में तो जननी और जन्मभूमि के समान लोक वन्द्य माता के रूप में गौ और गौवंश की महत्ता अनादिकाल से है। गाय, गीता और गंगा भारतीय संस्कृति की प्रतीक है। गीता की तरह ही गाय पूज्य है। हमारे शास्त्रों में कहा गया है कि गौ रूद्रो की माता हैं। गाय हिन्दू-मुसलमान-ईसाई का भेद नहीं करती बल्कि सभी को एक समान मीठा दूध देती है।

गो सेवा आयोग, उत्तर प्रदेश के उपाध्यक्ष श्री अतुल सिंह जी ने कहा कि ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज भारत में गोरक्षा आन्दोलन के अग्रणी नेताओं में एक थे। स्वतंत्रता के बाद से ही गोवंश की हत्या रोकने सम्बन्धी कानून बनाने के लिए धर्माचार्यों ने अनेकों बार अभियान चलाया। महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने गोवध बन्दी को आवश्यक मानने हुए कहा था कि गोरक्षा का प्रश्न मेरे लिए स्वराज्य से भी अधिक महत्वपूर्ण है। ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने कहा था कि यदि गाय नष्ट हो गयी तो भारतीय संस्कृति नष्ट हो जायेगी। गोरक्षा केवल कानून बनाने से नहीं होगी

इसके लिए समान जनमानस को जागरूक होना पड़ेगा। जब तक समाज गोरक्षणा के बारे में नहीं सोचेगा तब तक गोरक्षा संभव नहीं है। गोरक्षा के लिए गोरक्षपीठ प्रारम्भ से ही संकल्पित है। हमें यहाँ से संकल्प लेकर जाना है कि जहाँ तक संभव होगा गोरक्षण में अपनी सहभागिता निभायेंगे। जनजागरण एवं जनसंघर्ष के बिना गोरक्षा का अभियान पूरा नहीं होगा। सर्वमयी गौ हमारे लिए वरदायिनी है। उन्होंने कहा समुद्र मन्थन के फलस्वरूप उत्पन्न 14 रत्नों में 'सुरभि' अर्थात् गौ भी थी। गायों को तीनों लोकों की माता कहा गया है। पुण्यकामी गृहस्थ जनों को गौ सेवा करनी चाहिए। जो गौ सेवा परायण होता है उसकी श्री वृद्धि शीघ्र होती है। भविष्य पुराण में कहा गया है गौ की पीठ में ब्रह्म, गले में विष्णु, मुख में रुद्र प्रतिष्ठित है।

परम गौ भक्त प्रहलाद दास ब्रह्मचारी जी ने कहा कि भारत में प्रतिवर्ष गोबर आदि जैविक खाद के अभाव में लगभग 6 से 7 प्रतिशत भूमि बंजर होती जा रही है। ऐसे में गो और गोवंश की उपयोगिता हमारे कृषि कार्य हेतु अपरिहार्य बनती जा रही है। धर्म और आध्यात्म के साथ-साथ आर्थिक स्वावलम्बन के लिए भी गोवध पर पूर्ण प्रतिबंध देश की आवश्यकता है। यदि मानव की रक्षा करनी है तो गो और गंगा की रक्षा करनी होगी।

गोसेवक एवं पूर्व पशुधन प्रसार अधिकारी वरुण कुमार वर्मा वैरागी ने गो रक्षा पर कविता का पाठ किया। सम्मेलन का शुभारम्भ दोनों ब्रह्मलीन महन्त जी महाराज को अतिथियों द्वारा पुष्पांजलि से हुआ। पं० रंगनाथ त्रिपाठी द्वारा वैदिक मंगलाचरण, पुनीत पाण्डेय द्वारा गोरक्ष अष्टक पाठ प्रस्तुत किया गया। डॉ.शैलेन्द्र प्रताप सिंह, डॉ. अरविन्द चतुर्वेदी, डॉ. सुमित्रा सिंह, डॉ. नीरज सिंह, डॉ. अरुण कुमार तिवारी, डॉ. धर्मचन्द्र विश्वकर्मा, बृजेशमणि त्रिपाठी, डॉ. शिवानी सिंह, डॉ. गिरिशचन्द्र पाठक, डॉ. अविनाश प्रताप सिंह ने अतिथियों का स्वागत किया एवं संचालन डा० श्रीभगवान सिंह ने किया।

समारोह में दिगम्बर अखाड़ा के महन्त सुरेशदास जी महाराज, महन्त शिवनाथ जी, महन्त शान्तिनाथ जी, महन्त गंगा दास जी, महन्त मिथलेशनाथ जी, महन्त रविन्द्रदास जी, महन्त राममिलनदास जी, महन्त पंचानन पुरी, योगी कमलनाथ सहित देश भर से आये सन्त महात्मा एवं प्रबुद्धजन प्रस्तुत थे।